- bordernewsmirror@gmail.com
- पटना, दिल्ली व कोलकाता से एक साथ प्रसारित
- द्विभाषिक समाचार पत्र

BORDER NEWS MIRROR BNM to the point...

02 कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देने की घोषणा के लिए पीएम को बधाई: नीतीश

04 शिलान्यास के बाद पुल निर्माण कार्य नहीं होने से ग्रामीण आक्रोशित

बॉर्डर न्यूज मिरर

...खबरों से समझौता नहीं

● पटना, गुरुवार, 25 जनवरी 2024 | www.bordernewsmirror.com | ● पृष्ठ: 08, मूल्य: 5 रूपए ● वर्ष: 04, अंक: 339

ममता बनर्जी का अलग चुनाव लड़ने का फैसला हताशा का संकेत: अमित

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को विपक्षी गठबंधन से अलग होकर चुनाव लड़ने की घोषणा को लेकर भाजपा आईटी सेल प्रमुख और उत्तर बंगाल के पार्टी प्रभारी अमित मालवीय ने ममता बनर्जी और विपक्षी गठबंधन पर हमला बोला है। मालवीय ने कहा कि यह हताशा का संकेत है। बुधवार को मालवीय ने माइक्रो ब्लॉगिंग साइट एक्स पर लिखा कि पश्चिम बंगाल में अकेले लड़ने का ममता बनर्जी का फैसला हताशा का संकेत है। अपनी राजनीतिक जमीन बरकरार रखने में असमर्थ, वह सभी सीटों पर लड़ना चाहती हैं, इस उम्मीद में कि चुनाव के बाद भी वह प्रासंगिक बनी रह सकती हैं।

'अमृत पीढ़ी' देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी: पीएम

मोदी ने एनसीसी और एनएसएस वॉलंटियर्स से की मुलाकात

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को 'जेनरेशन जेड' को 'अमृत पीढ़ी' की संज्ञा देते हुए कहा कि भारत की 'अमृत पीढ़ी' देश को अमृतकाल में नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी। उन्होंने कहा कि 'राष्ट्र प्रथम' आपका गाइडिंग प्रिंसिपल होना चाहिए। 'जेनरेशन जेड' में 1996 से 2010 के बीच पैदा हुए युवा शामिल हैं। प्रधानमंत्री ने अपने आवास पर गणतंत्र दिवस की परेड में शामिल होने वाले राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) और राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) वॉलंटियर्स को संबोधित कर रहे थे। मोदी ने युवाओं को जीवन में अनुशासन का महत्व समझाते हुए उसे मोटिवेशन का मंत्र बनाने की सलाह दी। प्रधानमंत्री ने कहा, "आपकी पीढ़ी को आपके

शब्दों में 'जेनरेशन जेड' कहा जाता है। लेकिन, मैं आपको 'अमृत पीढी' मानता हूं। आप वो लोग हैं, जिनकी ऊर्जा अमृत काल में देश को गति देगी। जो करना है वो देश के लिए करना है। राष्ट्र प्रथम- आपका गाइडिंग प्रिंसिपल होना चाहिए। अपने जीवन में कभी भी विफलता से परेशान नहीं होना है।"

प्रधानमंत्री ने कहा, "आप सभी जानते हैं कि भारत ने 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प लिया है। अगले 25 साल आपके और देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमारा संकल्प है कि आपकी अमृत पीढ़ी का हर सपना पूरा हो। हमारा संकल्प है कि आपकी अमृत पीढ़ी के लिए अवसरों की भरमार हो। हमारा संकल्प है कि आपकी अमृत पीढ़ी के रास्ते की हर बाधा दूर हो।"

उन्होंने कहा कि आप गणतंत्र दिवस की परेड का हिस्सा बनने जा रहे हैं। इस बार ये दो वजहों से और विशेष हो गया है। पहला ये कि यह 75वां गणतंत्र दिवस है और दूसरा यह कि पहली बार गणतंत्र दिवस की परेड देश की नारीशक्ति को समर्पित है। मोदी ने कहा कि आज 'राष्ट्रीय बालिका दिवस' है, आज बेटियों के साहस, जज्बे और उनकी उपलब्धियों का गुणगान करने का दिन है।

कोयला गैसीकरण परियोजनाओं को प्रोत्साहन के लिए 8500 करोड़ की परियोजना को मंजूरी

बीएनएम@नई दिल्ली

केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने सरकारी सार्वजनिक उपक्रमों और निजी क्षेत्र की कोयला/लिग्नाइट गैसीकरण परियोजनाओं को प्रोत्साहन देने से जुड़ी योजना को मंजूरी दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में बुधवार को हुई केन्द्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में तीन श्रेणियों में वित्तीय सहायता देने से जुड़ी परियोजना को मंजूरी दी गई, जिन पर 8500 करोड़ रुपये का परिव्यय होगा। कोयला मंत्री प्रह्लाद जोशी के अनुसार पहली श्रेणी में सरकारी सार्वजनिक उपक्रमों के लिए 4,050 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इसमें 3

परियोजनाओं तक 1,350 करोड़ रुपये या पूंजीगत व्यय का 15 प्रतिशत जो भी कम हो, का एकमुश्त अनुदान प्रदान किया जाएगा।

दूसरी श्रेणी में निजी क्षेत्र के साथ-साथ सरकारी सार्वजनिक उपक्रमों के लिए 3,850 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इसमें प्रत्येक परियोजना के लिए 1 हजार करोड़ रुपये या पूंजीगत व्यय का 15 प्रतिशत, जो भी कम हो, का एकमुश्त अनुदान प्रदान किया गया है। टैरिफ-आधारित बोली प्रक्रिया पर कम से कम एक परियोजना के लिए बोली लगाई जाएगी और इसके मानदंड नीति आयोग के परामर्श से तैयार किए जाएंगे।

तीसरी श्रेणी में प्रदर्शन परियोजनाओं (स्वदेशी प्रौद्योगिकी), छोटे पैमाने के उत्पाद-आधारित गैसीकरण संयंत्रों के लिए 600 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। न्यूनतम पूंजीगत व्यय 100 करोड़ रुपये और 1500 एनएम3/घंटा सिन गैस का न्यूनतम उत्पादन वाली चयनित इकाई को इसके तहत 100 करोड़ रुपये या पूंजीगत व्यय का 15 प्रतिशत, जो भी कम हो, का एकमुश्त अनुदान दिया जाएगा। दूसरी और तीसरी श्रेणी के तहत संस्थाओं का चयन प्रतिस्पर्धी और पारदर्शी बोली प्रक्रिया के माध्यम से किया जाएगा। चयनित इकाई को अनुदान का भुगतान दो समान किश्तों में किया जाएगा।

सामाजिक न्याय को समर्पित रहा कर्पूरी ठाकुर का जीवन: नड्डा

नईदिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अध्यक्षजेपी नड्डा ने कहा कि सामाजिक न्याय के लिए बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री व जननायक स्वर्गीय कर्पूरी ठाकुर ने पूरा जीवन लगा दिया था। ऐसे महान नेता को भारत रत्न से सम्मानित कर देश के प्रधानमंत्री ने गरीबों का मान बढ़ाया है।

नड्डा ने बुधवार को एक बयान जारी कर कहा कि एक अत्यंत गरीब परिवार से निकल कर बिहार के मुख्यमंत्री पद को सुशोभित करने वाले, सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ने वाले जननायक कर्पूरी ठाकुर को प्रधानमंत्री मोदी द्वारा 'भारत रत्न' से सम्मानित करने के निर्णय की जितनी भी सराहना की जाए कम है। कर्पूरी ठाकुर को सम्मानित करने का मतलब है कि भारत के हर गरीब और वंचित को सम्मानित किया गया है। नड्डा ने कहा कि ठाकुर ने गरीबों को न्याय दिलाने में पूरा जीवन लगा दिया। इसके लिए कभी भी उन्होंने अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। आपातकाल का भी उन्होंने जमकर विरोध किया। नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने पिछड़े वर्ग को सबसे अधिक पहचान और सम्मान देने का काम किया है। आज मोदी कैबिनेट में 27 मंत्री ओबीसी समाज से हैं। भाजपा के 100 से अधिक सांसद पिछड़े वर्ग से हैं। देशभर में 300 से अधिक भाजपा के विधायक पिछड़े वर्ग से आते हैं और 65 से अधिक एमएलसी पिछड़े वर्ग से हैं, जो यह दिखाता है कि पिछड़े वर्ग को सबसे अधिक पहचान और सम्मान प्रधानमंत्री मोदी ने दिलवाने का काम किया है।

मप्र के कूनो नेशनल पार्क में नामीबिया की चीता ज्वाला ने तीन नहीं 'चार' शावक जन्मे

नई दिल्ली। मध्य प्रदेश के कूनो नेशनल पार्क में नामीबिया की चीता ज्वाला ने तीन नहीं चार शावकों को जन्म दिया है। यह जानकारी केंद्रीय पर्यावरणमंत्री भूपेंद्र यादव ने आज एक्स हैंडल पर साझा की है। कल उन्होंने कहा था कि ज्वाला ने तीन शावक जन्मे हैं। केंद्रीयमंत्री यादव ने आज एक्स हैंडल पर लिखा है, "जैसे ही अग्रिम पंक्ति के वन्यजीव योद्धा ज्वाला के करीब पहुंचने में कामयाब रहे, उन्होंने पाया कि उसने तीन नहीं, बल्कि चार शावकों को जन्म दिया है। इससे हमारा आनंद कई गुना बढ़ गया है। सभी को बधाई। हम प्रार्थना करते हैं कि शावक भारत में अपने घर में फलें-फूलें और समृद्ध हों।"

उल्लेखनीय है कि कूनो नेशनल पार्क में दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया से दो चरणों में 20 चीता लाए गए थे। कूनो राष्ट्रीय उद्यान (कूनो नेशनल पार्क) संरक्षित क्षेत्र है। इसकी स्थापना 1981 को वन्य अभयारण्य के रूप में की गई थी। यह राज्य के श्योपुर और मुरैना जिलों पर विस्तारित है।

राहुल के खिलाफ जांच सीआईडी को स्थानांतरित: डीजीपी

गुवाहाटी। असम पुलिस ने राहुल गांधी के खिलाफ बेरिकेडिंग पर पुलिसकर्मियों से झड़प मामले की जांच क्राइम इन्वेस्टीगेशन डिपार्टमेंट (सीआईडी) को स्थानांतरित कर दिया है। पुलिस महानिदेशक जीपी सिंह ने एक्स पर पोस्ट कर बताया कि बसिष्ठ थाना केस संख्या 55/24 के तहत पीडीपीपी अधिनियम के उल्लंघन में 23 जनवरी 2024 की घटना की जांच बुधवार को सीआईडी को स्थानांतरित कर दिया।

पुष्पांजलि | हाल ही में केंद्र सरकार ने किया भारत रत्न देने का ऐलान

कर्पूरी जी की जयंती पर राज्यपाल व मुख्यमंत्री ने दी श्रद्धांजलि

पटना। भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की जयंती पर बुधवार को बिहार विधान मंडल परिसर में आयोजित राजकीय समारोह में राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर एवं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उनकी आदमकद प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष अवध बिहारी चौधरी, उप मुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव, वित्त, वाणिज्य कर एवं संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री लेशी सिंह, परिवहन मंत्री शीला कुमारी, सूचना प्रावैधिकी मंत्री मो इसराईल मंसूरी, बिहार विधानसभा के उपाध्यक्ष महेश्वर हजारी, बिहार विधान परिषद के उप सभापति रामचन्द्र पूर्वे सहित अन्य जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने कर्पूरी ठाकुर की आदमकद प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर बिहार के उन विभूतियों, जिनका राजकीय समारोह आयोजित किया जाता है, उस पर आधारित एक पुस्तक का विमोचन राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने किया। बिहार गीत, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के कलाकारों ने आरती-पूजन एवं कर्पूरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित गीतों का गायन किया। कर्पूरी ठाकुर की जीवनी पर आधारित एक लघु फिल्म 'कर्पूरी ठाकुर गरीबों का मसीहा' प्रस्तुत की गई।

इसके पश्चात देशरत्न मार्ग स्थित कर्पूरी ठाकुर स्मृति संग्रहालय में कला संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उप मुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव, विधानसभा अध्यक्ष अवध बिहारी चौधरी, उर्जा मंत्री बिजेन्द्र प्रसाद यादव, वित्त, वाणिज्य कर एवं संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री जितेन्द्र कुमार राय, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री लेशी सिंह, परिवहन मंत्री शीला कुमारी, विधि मंत्री शमीम अहमद, बिहार विधान परिषद के उप सभापति रामचन्द्र पूर्वे, विधान पार्षद कुमुद वर्मा, पूर्व मंत्री श्याम रजक सहित अन्य जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी।

MADAN RAJ NURSING HOME
HOSPITAL ROAD MOTIHARI, (BIHAR)
Contact No.- 9801637890, 6200450565, 9113374254

कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देने की घोषणा के लिए पीएम को बधाई: नीतीश

पटना। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री व जननायक कर्पूरी ठाकुर की सौंवीं जयंती के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि उन्होंने वर्ष 2007 से वर्ष 2023 तक हर साल कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देने का अनुरोध करते रहे। चाहे कांग्रेस की सरकार रही हो या फिर राजग की। अब केंद्र सरकार ने कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देने का एलान किया है, जिसके लिए मैं केंद्र सरकार के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भी बधाई देता हूं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कर्पूरी के पुत्र रामनाथ ठाकुर को भी प्रधानमंत्री ने फोन कर

बधाई दी है। आज हम लोगों ने जननायक कर्पूरी ठाकुर के कार्यों को आगे बढ़ाया है, लेकिन आजकल लोग परिवारवाद को आगे बढ़ाते हैं। जब जननायक कर्पूरी ठाकुर का देहावसान हो गया, तब हम लोगों ने उनके सुपुत्र रामनाथ ठाकुर को आगे बढ़ाया। उन्हें पार्टी में स्थान दिया, मंत्री बनाया व सांसद बनाया। आजकल बहुत लोग अपने परिवार को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं, लेकिन जननायक ने कभी अपने परिवार को आगे नहीं बढ़ाया।

नीतीश कुमार ने कहा कि जननायक कर्पूरी ठाकुर ने ही पहली बार वर्ष 1978 में पिछड़ा वर्ग को 8 प्रतिशत और अति पिछड़ा वर्ग को 12 प्रतिशत आरक्षण दिया। अति पिछड़ा वर्ग ज्यादा गरीब है और उनकी संख्या भी ज्यादा है। जननायक के कार्यों को हमें हमेशा याद रखना है। उन्होंने ही पहली बार बिहार में शराबबंदी लागू की लेकिन समय से पहले ही उन्हें पद से हटा दिया गया, फिर शराबबंदी भी खत्म हो गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछड़ा-अति पिछड़ा वर्ग का कल्याण होना चाहिए। जिस सरकारी आवास में जननायक ठाकुर रहते थे, उसे आज भी संग्रहालय के रूप में सुरक्षित रखा गया है। मुख्यमंत्री रहते हुए जननायक कर्पूरी ठाकुर ने शिक्षा के क्षेत्र में काफी काम किया था।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमलोगों ने जाति आधारित गणना का काम करवाया। इसमें जाति की गणना के साथ-साथ एक-एक परिवार की आर्थिक स्थिति का जायजा लिया गया। आरक्षण की सीमा को बढ़ाया है। अनुसूचित जाति की आरक्षण सीमा को 20 प्रतिशत और अनुसूचित जनजाति का 2 प्रतिशत, अत्यंत पिछड़ा वर्ग का 25 प्रतिशत और पिछड़ा वर्ग को 18 प्रतिशत का आरक्षण का लाभ दिया। 50 प्रतिशत से आरक्षण की सीमा को बढ़ाकर 65 प्रतिशत कर दिया गया। अपर कास्ट में आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को केंद्र सरकार ने 10 प्रतिशत का आरक्षण दिया है, जिसे हमलोगों ने भी अपने राज्य में लागू किया है। कुल मिलाकर आरक्षण की सीमा 75 प्रतिशत हो गई है। जाति आधारित गणना के बाद यह बात सामने आई कि सभी जाति, वर्ग, धर्म में गरीब परिवार है।

केंद्र सरकार ने जननायक कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देकर देश को गौरवान्वित किया : तारकिशोर

कटिहार। बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तारकिशोर प्रसाद ने भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली एनडीए की सरकार द्वारा जननायक कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न की उपाधि देने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री जी के प्रति आभार प्रकट किया है।

उन्होंने कहा कि आजादी के बाद केन्द्र में कांग्रेस की सरकार लंबे अवधि तक रही एवं राष्ट्रीय जनता दल के नेता लालू प्रसाद यादव जी भी केन्द्र में मंत्री के रुप में रहे लेकिन जननायक कर्पूरी ठाकुर को देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न नही दिला सकें। लेकिन अतिपिछड़ा का बेटा जब देश का प्रधानमंत्री बना तो उसने समाजिक न्याय के मसीहा,

गुदरी के लाल जननायक कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देकर बिहार ही नही पुरे देश को गौरवान्वित किया। कर्पूरी ठाकुर वंचित एवं पिछड़े वर्ग के हिमायती रहे हैं साथ ही उनका जीवन सादगी से भरा रहा। राजनीति में वे ईमानदारी के पर्याय रहें। भारत रत्न के रुप में उनका सम्मान समाज के हाशिए पर खड़ा पिछड़ा दलित का सम्मान हैं।

कर्पूरी जयंती के मौके पर तेजस्वी ने याद दिलाई UPA सरकार में लालू यादव की मांग

पटना। भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की 100वीं जयंती के मौके पर राजधानी पटना में बुधवार को कई कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इसको लेकर आरजेडी की तरफ से एसके मेमोरियल हॉल में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इसमें आरजेडी प्रमुख लालू प्रसाद यादव, डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव सहित कई नेता शामिल हुए। इस दौरान तेजस्वी यादव ने कहा कि लालू यादव ने यूपीए सरकार में भी कर्पूरी जी को भारत रत्न देने की मांग की थी, लेकिन उस वक्त क्या हुआ? नहीं मिला। अब मिला वह अच्छी बात है। लालू यादव जब बीजेपी के सामने नहीं झुके तो जान लीजिए तेजस्वी यादव कभी नहीं झुकेगा।

केंद्र सरकार ने पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर की जयंती की पूर्व संध्या पर उन्हें मरणोपरांत भारत रत्न दिए जाने की घोषणा की है। केंद्र

सरकार ने मंगलवार की शाम बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कर्पूरी ठाकुर को मरणोपरांत भारत रत्न देने की घोषणा की। वहीं, इसको लेकर कई राजनीतिक दिग्गजों ने राजनीतिक प्रतिक्रियाएं दीं। इसमें पीएम नरेंद्र मोदी, सीएम नीतीश कुमार सहित कई दिग्गज शामिल हैं।

गौरतलब है कि बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर को देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न दिया जाएगा। कर्पूरी ठाकुर की पहचान स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक और राजनीतिज्ञ के रूप में रही है। वह बिहार के दूसरे उपमुख्यमंत्री और दो बार मुख्यमंत्री रहे थे। लोकप्रियता के कारण उन्हें जन-नायक कहा जाता था।

कर्पूरी ठाकुर को बिहार की राजनीति में सामाजिक न्याय की अलख जगाने वाला नेता माना जाता है। कर्पूरी ठाकुर साधारण नाई परिवार में जन्मे थे। कहा जाता है कि पूरी जिंदगी उन्होंने कांग्रेस के विरोध की राजनीति की और अपना सियासी मुकाम हासिल किया। यहां तक कि आपातकाल के दौरान तमाम कोशिशों के बावजूद इंदिरा गांधी उन्हें गिरफ्तार नहीं करवा सकी थीं।

खुशहाली राष्ट्रीय बालिका दिवस पर कार्यक्रम का किया आयोजन

700 बालिकाओं को मिला सुविधा किट

नवादा। राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर बुधवार को नवादा जिले के बाल विकास परियोजना के 14 परियोजना कार्यालय में विशेष समारोह का आयोजन कर 700 बालिकाओं को सुविधा किट दिए गए। ताकि उन्हें असुविधाओं का सामना नहीं करना पड़े ।आईसीडीएस के निदेशक के निर्देश पर राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर की किट वितरण समारोह का आयोजन किया गया था।

बाल विकास परियोजना नरहट में परियोजना पदाधिकारी ज्योति सिन्हा की अध्यक्षता में समारोह का आयोजन कर बालिकाओं की परिजनों को सुविधा किट दिया गया। मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी बैजू मिश्रा उपस्थित थे।सीडीपीओ ने कहा कि बालिकाओं की सुरक्षा के लिए यह किट दिया जा रहा है ।ताकि उसे विशेष स्तर पर सुविधा मुहैया कराई जा सके ।इस अवसर पर महिला पर्यवेक्षिका माधवी कुमारी, पूनम राय आदि उपस्थित थे। कौआकोल में राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर बुधवार को बाल विकास परियोजना कार्यालय की सीडीपीओ अंजली कुमारी ने प्रखण्ड के विभिन्न आंगनबाड़ी केंद्रों पर पहुंचकर बेबी किट का वितरण किया। सीडीपीओ अंजली कुमारी ने कौआकोल प्रखण्ड के सोखोदेवरा, ईटपकवा, गांधीधाम, कौआकोल पूर्वी सहित अन्य महादलित टोला स्थित आंगनबाड़ी केंद्र पहुंचकर 6 माह की कन्या लाभुकों के बीच बेबी किट का वितरण किया गया। इस दरम्यान आंगनबाड़ी सेविकाओं को आवश्यक दिशा निर्देश भी सीडीपीओ ने दिया।

सीडीपीओ ने कहा कि यह छोटी छोटी बच्चियां हमारे देश के कल के भविष्य हैं। इनकी अच्छी परवरिश से ही ये मुख्य धारा से जुड़कर समाज में अग्रणी भूमिका निभाएंगे।

बिहार में ठंड से छठी कक्षा के छात्र की मौत, दो छात्रा स्कूल में बेहोश होकर गिरी

पटना। स्कूल को बंद करने और खोलने को लेकर पटना डीएम और अपर मुख्य सचिव के बीच जहां तकरार तेज है, दूसरी ओर बिहार में अब ठंड से बच्चे की मौत हो रही है। मुजफ्फरपुर में स्कूल खुला रहने के कारण छठी कक्षा के छात्र की ठंड लगने से मौत हो गयी और एक बच्ची के बेहोश होकर गिर जाने की सूचना है। वहीं शिवहर जिले में भी स्कूल को खुला रखने के कारण छठी कक्षा में पढ़ने वाली 8 साल की बच्ची बेहोश होकर स्कूल में गिर गयी। उसकी भी तबीयत काफी खराब हो गयी है।

M.S. MEMORIAL PUBLIC SCHOOL
BALGANGA, ARERAJ ROAD, MOTIHARI
Contact No.- 9939047109, 9431203674

बेटियाँ हर क्षेत्र में सफलता का परचम लहरा रही: अम्बालिका

बीएनएम@केसरिया। राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर बुधवार को जयप्रभा आर्य कन्या प्रोजेक्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय केसरिया में बेटी बचाओ, बेटी पढाओ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस क्रम में दौड़ प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। समेकित बाल विकास योजना द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में विद्यालय की दर्जनों छात्राओं ने भाग लिया। जिसमें वर्ग नौ की छात्रा लक्की कुमारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं अनु कुमारी द्वितीय व गुड़िया कुमारी तीसरे स्थान पर रही। सभी सफल छात्राओं को आईसीडीएस की एलएस अम्बालिका कुमारी व अन्य ने ट्रैक सूट देकर पुरस्कृत किया। वहीं अन्य प्रतिभागियों को टी-शर्ट व टोपी प्रदान किया गया। इस अवसर पर एलएस अम्बालिका कुमारी ने कहा कि बेटियाँ हर क्षेत्र में सफलता का परचम लहरा रही है। जिससे समाज का नजरिया बेटियों के प्रति सकारात्मक हो रहा है। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि बेटी जिस क्षेत्र में बेहतर करना चाहती है उसे उस क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए हर सम्भव मदद करें। ताकि वह अपने परिवार, समाज के साथ साथ देश का नाम रोशन कर सके। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की प्रभारी एचएम पुष्पलता, एलएस तान्या गुप्ता, एलएस किरण कुमारी, शिक्षक जितेंद्र कुमार, आनंद मोहन, भरत प्रसाद, प्रमोद कुमार, संतोष कुमार सहित अन्य मौजूद थे।

राहत

आईसीडीएस द्वारा बच्चियों के बीच बांटी गई स्वेटर

बीएनएम@केसरिया। समेकित बाल विकास योजना के द्वारा बुधवार को प्रखण्ड क्षेत्र के मठिया पंचायत के दलित बस्ती में बच्चियों के बीच स्वेटर का वितरण किया गया। मौके पर मौजूद एलएस अम्बालिका कुमारी ने बताया कि विभागीय निर्देश के आलोक में आंगनबाड़ी केंद्र के पोषक क्षेत्र के दो से तीन माह के बच्चियों के बीच स्वेटर का वितरण किया गया। इससे करीब एक दर्जन से अधिक बच्चियों को लाभान्वित किया गया। इस क्रम में उन्होंने मौजूद सेविका से आंगनबाड़ी केंद्र में नामांकित बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा व पोषण आदि की जानकारी ली। साथ हीं आवश्यक दिशा-निर्देश दिया।

केसरिया में तीन बाल श्रमिक को कराया गया विमुक्त

आरोपी नियोजकों के विरुद्ध कार्रवाई में जुटा श्रम विभाग

बीएनएम@केसरिया

विभागीय निर्देश के आलोक में बुधवार को श्रम संसाधन की विशेष धावा दल के द्वारा प्रखण्ड क्षेत्र स्थित विभिन्न प्रतिष्ठानों में सघन जाँच अभियान चलाया गया। केसरिया के श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी सुरेंद्र कुमार के नेतृत्व में चालाये गये इस जाँच अभियान में तीन प्रतिष्ठान से तीन बाल श्रमिक को मुक्त कराया गया। इस क्रम में गणपति स्वीट्स, मुखिया जी का लाइन होटल एवं टुनटुन रिपेयरिंग सेंटर से एक-एक बाल श्रमिक को विमुक्त कराया गया श्रम अधीक्षक सत्य प्रकाश ने बताया कि यह अभियान पूर्वी चंपारण जिला अंतर्गत लगातार क्रियाशील रहेगा। बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम के तहत आरोपी सभी नियोजकों के विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज करने की कार्रवाई की जा रही है। वहीं सभी विमुक्त बाल श्रमिकों को बाल कल्याण समिति पूर्वी चंपारण के समक्ष उपस्थापित कर उन्हें बाल गृह में रखा गया है। विशेष धावा दल में श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी कोटवा उमेश प्रसाद सिंह, श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी ढाका राम प्रकाश, प्रयास संस्था के विजय कुमार शर्मा, पुलिस बल एवं एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट के सदस्य शामिल थे।

शुरुआत

प्रवासी पक्षियों एवं वेटलँड पर आश्रित पक्षियों की होगी गणना

वेटलैन्ड्स में तीसरे एशियन वाटरबर्ड की होगी सेन्सस

बीएनएम@मोतिहारी

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, बिहार सरकार के द्वारा वेटलैंड इंटरनेशनल साउथ एशिया एवं बॉम्बे नैचुरल हिस्ट्री सोसाइटी, मुंबई के सहयोग से सम्पूर्ण बिहार मे आज 25 जनवरी से आगामी 10 फरवरी 2024 तक तीसरे एशियन वाटरबर्ड सेंसस (गणना) किया जाएगा।

मोतिहारी शहर के लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय के जन्तुविज्ञान विभाग के सहायक प्राध्यापक, बर्ड-मैन ऑफ चम्पारण और एशियन वाटरबर्ड सेन्सस के स्टेट कोऑर्डिनटोर डॉ. नीरज कुमार के अनुसार पूर्वी चम्पारण, शिवहर एवं मुजफ्फरपुर जिला मे अवस्थित झीलों एवं नदियों में भी मोतिहारी वन प्रमंडल, मुजफ्फरपुर वन प्रमंडल एवं सीतामढ़ी (शिवहर) वन प्रमंडल के सहयोग से प्रवासी पक्षियों एवं वेटलैंड पर आश्रित पक्षियों एवं उनके अधिवास के विस्तृत अध्ययन के लिए एशियन वाटरबर्ड सेन्सस होने जा रहा है।

इन तीनों जिलों में दिनांक 26 जनवरी से 2 फ़रवरी 2024 तक प्रवासी पक्षियों एवं वेटलँड पर आश्रित पक्षियों का गणना किया जाएगा। डॉ. नीरज कुमार एवं डॉ. कुशाग्र राजेन्द्र के नेतृत्व मे पूर्वी चम्पारण, शिवहर एवं मुजफ्फरपुर जिला के चयनित 7 झीलों, 3 नदियों एवं मेहसी प्रखण्ड स्थित भीमलपुर जंगल का एशियन वाटरबर्ड का गणना एवं अध्ययन किया जाएगा।

डॉ. कुमार के द्वारा तीसरे एशियन वाटरबर्ड सेंसस (गणना) के लिए पूर्वी चम्पारण जिले के सरोतर मन, बसमानपुर मन, चिलराओं मन, सोनबरसा मन, गंडक नदी, बूढ़ी गंडक नदी भीमलपुर जंगल; शिवहर जिला मे बागमती नदी एवं मुजफ्फरपुर जिले के कांटी मन, झपहा मन और मनिका मन का अनुमोदन किया है।

एशियन वाटरबर्ड सेंसस (गणना) के बाद प्राप्त डाटा (रेपोर्ट) को पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, बिहार सरकार को समर्पित किया जाएगा एवं उसके बाद उसका डाटा एनालिसिस कर के एशियन वाटरबर्ड सेंसस के वार्षिक रिपोर्ट मे प्रकाशित किया जाएगा। अब तक हुए दोनों एशियन वाटरबर्ड सेंसस का ऐन्यूअल रिपोर्ट पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, बिहार सरकार के द्वारा प्रकाशित किया जा चुका है।

एशियन वाटरबर्ड सेन्सस के स्टेट कोऑर्डिनटोर डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि बिहार मे वर्ष 2022 मे पहली बार हुए एशियन वाटरबर्ड सेंसस में राज्य के 23 जिलों के कुल 68 एवं वर्ष 2023 मे हुए दूसरे एशियन वाटरबर्ड सेंसस मे 26 जिलों के कुल 72 चयनित झीलों, सरोवरों, नदियों एवं अन्य महत्वपूर्ण जलाशयों में प्रवासी पक्षियों एवं वेटलँड पर आश्रित पक्षियों का गणना किया गया था।

इस वर्ष पूरे बिहार में 87 चयनित झीलों, सरोवरों, नदियों एवं अन्य महत्वपूर्ण जलाशयों में प्रवासी पक्षियों एवं वेटलँड पर आश्रित पक्षियों का गणना तथा प्रवासी एवं जलीये पक्षियों के अधिवास का भी अध्ययन किया जाएगा। इस अध्ययन के लिए अत्याधुनिक डीएसएलआर कैमरा, दूरबीन, जीपीएस इत्यादि का उपयोग किया जाएगा। डॉ. नीरज कुमार एवं डॉ. कुशाग्र राजेन्द्र (ऐमिटी यूनिवर्सिटी हरियाणा) के अलावे प्रशांत कुमार (वाल्मीकिनगर), गुड्डू कुमार (इनरवाभार, पहाड़पुर) एवं वन विभाग के सदस्य भी इस गणना मे शामिल होंगे।

परीक्षा देने गई 10वीं की छात्रा का अपहरण, प्राथमिकी दर्ज

तुरकौलिया। थाना क्षेत्र अंतर्गत जयसिंहपुर पंचायत के एक गांव की 10वीं की छात्रा का अपहरण करने का मामला प्रकाश में आया है। घटना को लेकर अपहृत छात्रा के पिता ने थाना में आवेदन देकर प्राथमिकी दर्ज कराई है। जहां प्राथमिकी में बताया गया है कि छात्रा को उसके पिता तुरकौलिया के एक स्कूल में मैट्रिक के प्रेक्टिकल परीक्षा देने के लिए विद्यालय छोड़ कर घर चले गए। जब शाम में बुलाने आए तो पुत्री स्कूल में नही थी। खोजबीन के बाद मालूम हुआ कि मुफस्सिल थाना क्षेत्र के संतोष कुमार, लक्ष्मण दास, जयसिंहपुर बेचू टोला के अंजू देवी, अखिलेश दास, रामचंद्र दास सहित सात लोगो ने छात्रा का अपहरण कर लिया है। थानाध्यक्ष अनिल कुमार ने बताया कि एफआईआर दर्ज कर अपहृत छात्रा के बरामदगी व आरोपी को पकड़ने के लिए छापेमारी की जा रही है।

जिला स्तरीय फरोग–ए–उर्दू सेमिनार –सह– मुशायरा का शुभारंभ

मोतिहारी। नगर भवन, मोतिहारी में जिलाधिकारी, मोतिहारी द्वारा जिला स्तरीय फरोग-ए-उर्दू सेमिनार -सह- मुशायरा का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया।

उर्दू दिलों को जोड़ने वाली भाषा है, यह जुबान कौमी एकता की मिसाल है, इस भाषा में भारतीय तहजीब दिखती है, नगर भवन मोतिहारी सभागार में मंत्रिमंडल सचिवालय उर्दू निदेशालय के तत्वावधान में आयोजित जिला स्तरीय फरोग-ए-उर्दू सेमिनार -सह - मुशायरा को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी सौरभ जोरवाल ने उक्त बातें कही।

उन्होंने कहा कि सरकार उर्दू की बेहतरी के लिए कई स्तर से काम कर रही है और उर्दू भाषी उसका लाभ ले रहे हैं। उप विकास आयुक्त महोदय ने कहा कि उर्दू काफी मीठी जुबान है और समाज को एक सूत्र में बांधने का काम करती है। स्वागत उर्दू कोषांग के प्रभारी पदाधिकारी -सह -जिला पंचायती राज पदाधिकारी द्वारा किया गया। मंच संचालन ओजैर अंजुम ने किया।कार्यक्रम तीन सत्रों में हुआ। पहले सत्र में छात्र-छात्राओं ने उर्दू के फरोग पर विस्तार से अपने अपने विचार रखे।

दूसरे सत्र में सेमिनार हुआ, जिसमें सरफुद्दीन शर्राफ, इन्तेजारूल व अजहर हुसैन अंसारी ने अपने विचारों को रखा। वहीं डॉ.मो.मशहुर अहमद, ओजैर अंजुम व फिरोज आलम ने आलेख पाठ किया।

तीसरे सत्र में मुशायरा हुआ. मुशायरा में डॉ.तहरीम फातिमा, गुलरेज शहजाद,ओजैर अंजुमा, डॉ.सबा अख्तर, हातिम जावेद, ओजैर सालिम, फसीह अख्तर, रफी अहमद आफताब, कलीमुल्लाह कलीम, मो. जफर इमाम, सईद कादरी व आकीब चिस्ती ने अपनी अपनी रचनाएं पढ़ी और श्रोताओं को खुब झुमाया। मुशायरा का संचालन डॉ.सबा अख्तर ने किया।

मौके पर पर तनवीर खान, सोहैल साहिल, उर्दू कोषांग के मो. कमाल सहित बड़ी संख्या में शिक्षक व छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

शिलान्यास के बाद पुल निर्माण कार्य नहीं होने से ग्रामीण आक्रोशित

भाजपा विधायक के प्रति किया आक्रोश प्रदर्शन

5 करोड़ 10 लाख की लागत से कराया जाना है पुल निर्माण का कार्य

पताही। चिरैया भाजपा विधायक लालबाबू प्रसाद गुप्ता के कार्यशैली से नाराज लोगों ने मोर्चा खोल दिया है। पताही प्रखंड क्षेत्र के कालू पाकर भाया बेलाही राम पंचायत स्थित पंचायत से निकलने वाली मुख्य सड़क में पढ़ने वाली नहर में पुलिया निर्माण के भाजपा विधायक लालबाबू प्रसाद गुप्ता के द्वारा शिलान्यास करने के बाद भी कार्य शुरू नहीं होने से ग्रामीणों में काफी आक्रोश है। वही कार्य स्थल पर भाजपा विधायक की लगी शिलान्यास बोर्ड को आक्रोशित सामाजिक तत्वों ने इस तरह से घीस दिया है। की बोर्ड पर दर्शाया गया प्रकलित राशि नहीं पढ़ा जा सका है। इतना ही नहीं शिलापट्ट पर लगी भाजपा विधायक लालबाबू प्रसाद गुप्ता की तस्वीर को भी बुरी तरह से घिस दिया है जिससे भाजपा विधायक का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा है । वही ग्रामीणों ने बताया कि भाजपा विधायक द्वारा उक्त पुल निर्माण कार्य का शिलान्यास तो कर दिया गया, लेकिन अबतक यहाँ पुल निर्माण का काम शुरू नहीं हुआ है। पुल निर्माण का काम शुरू नहीं होने से नाराज ग्रामीणों ने पुल का निर्माण कार्य जल्द शुरू करने की माँग करते हुए आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा के प्रति वोट बहिष्कार की भी चेतावनी दिया है। जिसको लेकर बेलाही राम पंचायत के दर्जनों ग्रामीणों ने पुल निर्माण कार्यस्थल पर इकट्ठा होकर निर्माण कार्य जल्द शुरू करने का माँग उठाया है।

पुल निर्माण से बेलाही राम पंचायत और अन्य कई गाँवों की प्रखण्ड मुख्यालय से दूरी हो जायेगी आधी

बेलाही राम गाँव के बीच छोटी नदी में पुलिया निर्माण हो जाने से बेलाही राम गाँव के साथ ही आसपास के कई अन्य गाँवों की प्रखण्ड मुख्यालय से दूरी आधी हो जाएगी। इन गाँवों के ग्रामीणों को अभी दूसरे रास्ते से दूरी तय कर प्रखंड मुख्यालय आना पड़ता है। पुल निर्माण से इस रास्ते से ग्रामीण कम दूरी तय कर पताही पहुँच जायेंगे। कई ग्रामीणों ने बताया कि भाजपा विधायक लालबाबू प्रसाद गुप्ता के द्वारा लोकसभा चुनाव की तैयारी की जा रही है इसको लेकर जगह-जगह अपनी तस्वीर लगाकर शिलान्यास तो कर दी जा रही है लेकिन धरातल पर अब तक पूल निर्माण का कार्य शुरू नहीं कराया जा पुल निर्माण के लिये भाजपा विधायक द्वारा शिलान्यास कर दिया गया। लेकिन अबतक काम शुरू नहीं हुआ है। पुल बन जाने से क्षेत्र के कई गाँवों के ग्रामीणों को सुविधा होगी।

शिलान्यास के बाद भी कल निर्माण कार्य शुरू नहीं होने से अजीज होकर ग्रामीणों ने आगामी होने वाली लोकसभा चुनाव में वोट बहिष्कार का लिया निर्णय पुल नहीं होने से ग्रामीणों को काफी समस्या हो रही है। आक्रोशित होकर ग्रामीणों ने कहा कि हम सब ग्रामीणों की माँग है पुल का निर्माण कार्य जल्द शुरू होना चाहिये। पुल निर्माण कार्य शुरू नहीं होने पर हम सब ग्रामीणों ने आगामी लोकसभा चुनाव में वोट बहिष्कार का निर्णय लिया है। वही संबंध में पकड़ी दयाल स्कूटी इंजीनियर मनोज तिवारी ने बताया कि कालूपाकड़ भाया बेलाही राम पंचायत स्थित 5 करोड़ 10 लाख की लागत से पुल का निर्माण कार्य कराया जाना है जिसकी शिलान्यास क्षेत्रीय विधायक लालबाबू प्रसाद गुप्ता द्वारा किया गया है कार्य को जल्द ही शुरू कर दिया जाएगा।

क्या कहते हैं क्षेत्रीय विधायक लालबाबू प्रसाद गुप्ता

वहीं क्षेत्रीय विधायक लालबाबू प्रसाद गुप्ता ने कहा कि शिलान्यास का तिथि आज नहीं है यह कार्य तकरीबन 5 करोड़ की लागत से मोतिहारी की किसी एजेंसी द्वारा कराया जाना है। एजेंसी का नाम याद नहीं है उसी एजेंसी द्वारा एक और पुल का कार्य शुरू किया गया है उस पूल का कार्य समाप्त होने के बाद बेलाहीराम पंचायत में बनने वाली पूल का निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा।

शिक्षा संवाद कार्यक्रम का आयोजन

तुरकौलिया। प्रखण्ड के श्रीराजाराम उच्चतर विद्यालय तुरकौलिया में शिक्षा संवाद कार्यक्रम का आयोजन बुधवार को किया गया। जिसका उद्घाटन डीपीओ हेमचंद्र, एचएम इरशाद अहमद व अन्य ने संयुक्त रुप से किया। डीईओ संजय कुमार ने कहा कि शिक्षा ग्रहण करने से कोई वंचित नही रहे।

गरीब और मजदूर के बच्चे भी आसानी से शिक्षा प्राप्त कर सके। इसे लेकर सरकार द्वारा साइकिल, पोशाक, स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड, आठवीं क्लास तक मुफ्त में पुस्तक वितरण, एमडीएम आदि कई तरह के योजनाऐं चलाईं जा रही हैं। ताकि बच्चे पढ़ सके। वही विद्यालय के शिक्षा संबंधित सभी तरह के आयोजनों में शामिल होने वाले 20 बच्चों को कापी कलम देकर हिम्मत अफजाई करते हुए सम्मानित किया।

डीपीओ हेमचंद्र और एचएम इरशाद अहमद ने भी शिक्षा पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। कार्यक्रम में अभिभावक, छात्र छात्राओं के अलावे मुखिया रामजनम पासवान, कांग्रेस प्रखंड राजकुमार अंजुमन, योगेन्द्र प्रसाद, रामसकल पटेल,सत्येन्द्र नाथ तिवारी, सरपंच मनोज प्रसाद आदि जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

BORDER NEWSMIRROR

Thursday 25 January 2024

Editorial

समस्त भारत हुआ राममय

अयोध्या में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा भव्य रूप से सम्पन्न हो गई। संत समाज के अलावा पूरे विश्व से मात्र लगभग ढाई - तीन हज़ार चुनिंदा लोगों को आमंत्रित किया गया था जिसमें सौभाग्य से मैं सपत्नीक आमंत्रित था ।यह सबों के लिये जीवन के एक दुर्लभ क्षण के रूप में याद रखा जाएगा। यह कल्पना से परे अविस्मरणीय दृश्य रहा। अयोध्या के राम मंदिर में अभिजीत मुहूर्त में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूरे विधि - विधान के साथ रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हुई। इसके साथ ही सारा देश सारा देश राममय हो गया।पूरे देश क्या विश्व भर के राम भक्तों के मन में भावनाओं की अनंत आनंद के हिलोरें हैं। भावनाओं की अभिव्यक्ति में शब्द सक्षम या पर्याप्त नहीं हैं। कश्मीर में बर्फ से ढकी ऊंची चोटियों से लेकर कन्याकुमारी में धूप से सराबोर समुद्र तटों तक,राम नाम की गूंज ने पूरे भारत में भक्ति का माहौल बना दिया है। अब अयोध्या में ऐतिहासिक राम मंदिर भारत की एकता और भक्ति के प्रतीक के रूप में खड़ा है, न केवल भव्यता में, बल्कि देश-विदेश से मिले योगदान के रूप में भी यह मंदिर अद्वितीय है।कई बुद्धिमान कह रहे थे कि दक्षिण के प्रदेशों में , ख़ासकर तमिलनाडु और केरल में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा का विरोध हो रहा है । लेकिन , आज अयोध्या की सड़कों पर जो दृश्य मैंने देखा वह तो बिलकुल अलग था । छोटे से अयोध्या नगरी में लाखों स्त्री - पुरुष भरे पड़े हैं । कोई सड़क ख़ाली नहीं दिखी । सरयू का तट भी भरा पड़ा है । इसमें पूरे देश के सभी राज्यों से आये हुए लोग थे । तमिलनाडु तो भरपूर थे । शंकर महादेवन का राम का भजन तो अद्भुत था । प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राष्ट्र स्वयं सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत समेत हजारों राम भक्तों की उपस्थिति में प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम संपन्न हो गया।सभी के सभी अथिति सुबह दस बजे से लेकर साढ़े तीन बजे तक मंत्र मुग्ध होकर बैठे रहे , चाहे अमिताभ बच्चन हो या मुकेश अंबानी , सचिन तेंदुलकर हों या अक्षय कुमार , माधुरी दीक्षित हों, कंगना रानौत, श्री श्री रविशंकर हों या बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री , हेमा मालिनी जी हों या दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा , सब के सब साढ़े पाँच घंटे बैठे रहे !

गणतंत्र दिवस पर याद रखना इन बालवीरों को

आर.के. सिन्हा

हर साल जनवरी का महीने आते ही देश में गणतंत्र दिवस की तैयारियां अपने चरम पर पहुंच जाती हैं। राजधानी दिल्ली में तो गणतंत्र दिवस की तैयारियों बाकी जगहों से अधिक बड़े स्तर पर होती हैं क्योंकि राजधानी दिल्ली में ही गणतंत्र दिवस परेड निकलती है। उस परेड का हिस्सा वे बालवीर भी होते हैं, जिन्हें देश उनके साहस, सूझबूझ और शौर्य के लिए सम्मानित कर रहा होता है। वे जब राष्ट्रपति जी को सलामी देते हुए आगे बढ़ते हैं, तो कर्तव्यपथ (पहले राजपथ) में उपस्थित जनसमूह उनका हर्षध्वनि से स्वागत करता है। गणतंत्र दिवस परेड का 1959 से हिस्सा हैं बालवीर पुरस्कार विजेता। यह कुछ साल से खुली जीप में निकलने लगे हैं। हालांकि लंबे समय तक यह हाथियों पर सवार होते थे। पर मेनका गांधी के विरोध के बाद इन्हें हाथियों पर बैठाने की परंपरा को रोक दिया गया। बालवीर गणतंत्र दिवस परेड से दस दिन पहले राजधानी में आकर परेड की रिहर्सल में शामिल होते हैं। इनके अलावा, यह दोपहर और शाम को कभी राष्ट्रपति कभी, प्रधानमंत्री, रक्षामंत्री, कभी दिल्ली के मुख्यमंत्री और उपराज्यपाल वायुसेना नौसेना और थलसेनाध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मिलते हैं। कभी लालकिला, पुरानाकिला, कुतुब मीनार, हुमायूँ का मकबरा जैसी ऐतिहासिक इमारतें और कभी फन एंड फूड विलेज जैसे मनोरंजक स्थल घूमते हैं। इन्हें राजधानी के फन एंड फूड विलेज के संस्थापक और नेताजी सुभाष चंद्र बोस के साथी सरदार सेवा सिंह नामधारी बहुत सारे उपहार देते थे। उनके ना रहने के बाद भी बालवीरों का वहां सम्मानित किया जाता है। गणतंत्र दिवस से कुछ दिन पहले तक तो यह बालवीर खबरों में रहते हैं। यह अपने इंटरव्यू देते हैं और फिर यह ओझल हो जाते हैं। यह स्थिति कोई आदर्श नहीं मानी जा सकती। कोशिश तो ऐसी होनी चाहिए कि जिन्हें बालवीर पुरस्कार मिला, उन्हें उनके राज्यों की सरकारें जीवन में आगे बढ़ने के हर संभव अवसर दें। हमें पुरस्कार सांकेतिक रूप से नहीं देने चाहिए। ईमानदार कोशिश होनी चाहिए ताकि बालवीरों को बेहतर शिक्षा के अवसर मिलें। आमतौर पर इनका संबंध देश के सुदूर इलाकों में रहने वाले निर्धन परिवारों से ही होता है। इन्हें हर संभव प्रोत्साहन की दरकार होती है। यह सब देश के नौनिहाल होते हैं। इनके प्रति ठंडा रूख रखना गलत है। अब तक विभिन्न राज्यों से करीब एक हजार से भी अधिक बच्चों को राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है। वर्ष 2018 के बाद से भारत सरकार का बाल विकास मंत्रालय स्वयं इन बच्चों का चयन करता है अब यह राष्ट्रीय पुरस्कार वीरता श्रेणी के अतिरिक्त खेल, मनोरंजन, विज्ञान अनुसंधान, आदि अन्य अनेक श्रेणियों में भी बाल प्रतिभाओं को दिए जाने लगे हैं। अब देश में कितने लोगों को याद है कि पहला बालवीर पुरस्कार हरीश मेहरा नाम के बालक को मिला था। अब हरीश मेहरा करीब 80 साल के बुजुर्ग हो गए हैं। वे दिल्ली में ही रहते हैं। उन्होंने देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को एक बड़े हादसे का शिकार होने से बचाया था। वह तारीख थी 2 अक्तूबर,1957। स्थान था दिल्ली का रामलीला मैदान। शाम के सात बजे थे। उस दिन हरीश मेहरा राजधानी के रामलीला मैदान में चल रहे एक कार्यक्रम के दौरान वलंटियर की ड्यूटी दे रहे थे। वीआईपी मेहमानों के लिए आरक्षित कुर्सियों पर पंडित नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी, केन्द्रीय मंत्री बाबू जगजीवन राम वगैरह भी उपस्थित थे। तब ही उस शामियाने के ऊपर तेजी से आग की लपटें फैलने लगीं जिधर तमाम नामवर हस्तियां बैठीं थीं।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)।

Today's **Opinion**

पद ही सर्वोपरि, प्राथमिकता में पत्रकार हैं कहां !

शाहनवाज़ हसन

पत्रकार संघ IFWJ की स्थापना 28 अक्टूबर 1950 में जिन उद्देश्यों को लेकर की गयी थी, 90 के दशक आते-आते उद्देश्य पीछे छूट गये और आपसी मतभेद इतने बढ़ गये कि वे कई टुकड़ों में बंटते चले गये। पहली टूट 08 जून 1990 को हुई और IJU का गठन किया गया। 90 के दशक के बाद फिर एक टूट 2014 में हुई और फिर यह दो टुकड़ों में बंट गया। एक गुट ने दूसरे गुट के पदाधिकारियों को संगठन से निष्कासित कर दिया। अब मामला वर्षों से न्यायलय में लम्बित है। इसके बावजूद तीनों ही गुट IFWJ(Pandey), IFWJ(Rao) & IFWJ(Bhargav) स्वयं को IFWJ का सही प्रतिनिधि बता कर इन वर्षों में केवल कार्यक्रम आयोजित कर संगठन के नाम पर खानापूर्ति करते चले आ रहे हैं। इन वर्षों में इनमें से कोई भी एक गुट कभी किसी पत्रकार के साथ तब धरातल पर कहीं खड़ा नहीं हुआ, जब पत्रकारों को संघ से सहयोग की उम्मीद रही। उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड एवं छत्तीसगढ़ में पत्रकारों की हत्या के बाद उनमें से किसी गुट के स्वघोषित अध्यक्ष दूर-दूर तलक कहीं दिखाई नहीं दिये। जब पत्रकारों के विरुद्ध झूठे मुकदमे दर्ज किये जा रहे थे, तब इन सभी में से किसी ने भी पत्रकार के साथ खड़े होना तो दूर, उन्हें किसी प्रकार की कोई सहायता प्रदान नहीं की। उसी प्रकार NUJI भी दो भागों में बंट गया। यहां भी यह बंटवारा किसी पत्रकार हित के मुद्दे को लेकर नहीं था। पद पर बने रहने के लिए वे आपस में ही नूरा-कुश्ती करते दिखाई दिय। पत्रकार हितों की रक्षा के लिए बना पत्रकार संगठन आज कई टुकड़ों में बंट गया है। उद्देश्य को लेकर कोई भी गुट कितना सक्रिय रहा है, यह जानना हो, तो उन पत्रकारों के परिजनों से पता करें, जिनकी पिछले 10 वर्षों में हत्याएं हुई हैं...उन पत्रकारों से भी पूछें, जिन्हें झूठे आरोपों में जेल भेजा गया। तब इन संगठनों के मठाधीश अपने निजी स्वार्थ के लिए कभी मुलायम, कभी अखिलेश, तो कभी मायावती के गुणगान में व्यस्त रहे थे। हर टूट का कारण संगठन में पद पर बने रहने के लिए रहा ; यह कहा जाये, तो गलत नहीं होगा। कुछ संगठनों में टूट धुर्त-मक्कार पत्रकारों के कारण भी हुई। वे पत्रकार संगठन को जाति विशेष संगठन बनाने के लिए गैर पत्रकारों को अपने पत्रकार संघ में न केवल शामिल करने लगे, बल्कि उन्हें महत्त्वपूर्ण पद पर नियुक्त करने लगे। एक प्रश्न पत्रकार साथियों के मस्तिष्क में अवश्य आता होगा कि आखिर IFWJ एवं NUJI को लेकर ही इतनी मारामारी क्यों रही ? क्यों तीन टुकड़ों में बंटे IFWJ के गुट स्वयं को असली और दूसरे को फर्जी प्रमाणित करने के लिए न्यायालय में वर्षों से मुकदमेबाजी कर रहे हैं। एक गुट के अध्यक्ष लगभग 30 वर्षों से अध्यक्ष के पद पर आसीन हैं और अपने बाद यह पद अपने सुपुत्र को सौंपने की लगभग पूरी तैयारी कर बैठे हैं। वहीं, दूसरे गुट पर उच्चतम न्यायालय के एक अधिवक्ता लम्बे समय से काबिज़ हैं। IFWJ की सम्पत्ति लगभग 18-20 करोड़ की बतायी जाती है, जिसमें लखनऊ प्रेस क्लब का भवन भी शामिल है। हर वर्ष एक अनुमान के अनुसार 35-50 लाख तक की आमदनी की बात कही जाती है। IFWJ को लेकर मतभेद इसी वित्तीय अनियमितता को लेकर वर्षों से चला आ रहा है। कोई 30 वर्षों से संविधान की धज्जियां उड़ाते हुए स्वघोषित अध्यक्ष है, तो कोई पत्रकार न होते हुए भी स्वयं को अध्यक्ष घोषित कर बैठा है। गुटों में बंटे IFWJ के किसी भी गुट को पिछले 05 वर्षों में पत्रकारों के लिए संघर्ष करते कभी नहीं देखा गया। अब तीसरे गुट का गठन किया गया है, जहां गठन के साथ ही विवाद खुल कर सामने आ गया है। बिना किसी बैठक के महासचिव घोषित किये गये पत्रकार ने यह कहा था कि मैं जब दावेदार ही नहीं था, तो यह पद मुझे कैसे दे दिया गया। कुल मिला कर यही कहा जा सकता है कि पत्रकारों के हितों की रक्षा के लिए बने संगठन का आपसी मतभेद एवं वित्तीय अनियमितता के कारण मठाधीशों ने बंटाधार कर दिया है। वहीं, दूसरी ओर उत्तर प्रदेश, बिहार एवं झारखंड जैसे राज्यों में सैंकड़ों पत्रकार संगठन कागज़ पर बने हुए हैं, जिनका एक मात्र उद्देश उगाही करना रह गया है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)।

मुद्रक एवं स्वामी सागर सूरज, द्वारा राजाबाजार-कचहरी रोड, मोतिहारी बिहार -845401 से मुद्रित तथा सरोतर निवास राजाबाजार, मोतिहारी बिहार से प्रकाशित, संपादक सागर सूरज* फोन न:-06252-296796,
प्रसार:-9470050309 ईमेल:- bordernewsmirror@gmail.com वेबसाइट:- www.bordernewsmirror.com(*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार) TITLE CODE - BIHBIL02431

समीक्षा : टिकाऊ चमचों की वापसी वैचारिक व्यंग्य संग्रह है

विवेक रंजन श्रीवास्तव , भोपाल

किताब की शुरुवात लेखक के मन में उद्भूत विचारों से होती है. लेखक लिखता है . कम्पोजर कम्पोज कारता है. अक्षर शब्द और शब्द वाक्य बन जाते हैं, भाव मुखर हो उठते हैं. प्रकाशक छापता है. समारोह पूर्वक किताबों के विमोचन होते हैं. समीक्षक चर्चा करते हैं. किताब विक्रेता से होते हुये पाठक तक पहुंचती है. पाठक जब पुस्तक पढ़कर लेखक की वैचारिक यात्रा में बराबरी से भागीदारी करता है, तब किंचित यह यात्रा गंतव्य तक पहुंचती लगती है.

रचना के दीर्घगामी प्रभाव पड़ते हैं. लेखक सम्मानित होते हैं, पाठक रचनाकार के प्रशंसक, या आलोचक बन जाते हैं. अर्थात किताब की यात्रा सतत है, लम्बी होती है. अशोक व्यास व्यंग्य के मंजे हुये प्रस्तोता हैं. टिकाऊ चमचों की वापसी उनकी दूसरी किताब है. सुस्थापित लोकप्रिय, भावना प्रकाशन से यह कृति अच्छे गेटअप में प्रकाशित है.

सूर्यबाला जी ने प्रारंभिक पन्नो में अपनी भूमिका में पाया है कि लेखक अपने व्यंग्य कर्म में कहिं भी असावधान नहीं है. लालित्य ललित ने संग्रह के व्यंग्य पढ़कर आशा व्यक्त की है कि अपने आगामी संग्रहों में लेखक की चिंताये और व्यापक व अंतर्राष्ट्रीय हों. इस संग्रह में बत्तीस व्यंग्य हैं. पाठको के लिये विषयों पर सरसरी नजर डालना जरूरी है. अंग्रेजी घर पर है ?, अजब गजब मध्य प्रदेश , अध्यक्ष जी नहीं रहे. अध्यक्ष जी अमर रहें, आइए सरकार, जाइए, आभासी दुनिया का वास्तविक बन्दा, कलयुग नाम अधारा आपका आधार कार्ड, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भारतीय तरीका, कोरोना कल्चर का प्रभाव, कोरोना की कृपा, गोद ग्रहण समारोह, जा आ आ जा आ आ दू !

जा आ आ दू , टिकाऊ चमचों की वापसी, ताली बजाओ ताल मिलाओ, दामाद बनाम फूफाजी, बुरा नहीं मानेंगे... चुनाव है, भारत निर्माण यात्रा, मध्यक्षता करा लो... मध्यक्षता, रंगबाज राजनीति, लिव आउट अर्थात छोड़ छुट्टा, विश्व युद्ध की संभावना से अभिभूत , सड़क बनाएँ, गड्ढे खोदें सतर्क मध्यमार्गी , सत्तर प्लस का युवा गणतन्त्र, साहित्यमति का बाहुबली साहित्यकार, सेवा के लिए प्रवेश, ज्ञान के लिए प्रस्थान, सोशल मीडिया के ट्रैफिक सिग्नल, हलवा वाला बजट , हाँ. मैं हूँ सुरक्षित !

होली के रंग बापू के संग, ईश्वर के यहाँ जल वितरण समस्या, जैसे दूरदर्शन के दिन फिरे और पोस्ट वाला ऑफिस डाकघर शीर्षकों से हजार, पंद्रह सौ शब्दों में अपनी बात कहते व्यंग्य लेखों को इस पुस्तक का कलेवर बनाया गया है. टाइटिल लेख टिकाऊ चमचों की वापसी से यह अंश उधृत करता हूं, जिससे आपको रचनाकार की शैली का किंचित आभास हो सके. प्लास्टिक के चमचों की जगह फिर धातुओ के चम्मचों का इस्तेमाल पसंद किया जा रहा है, यूज एण्ड थ्रो के जमाने में स्थायी और टिकाउ चमचों की वापसी स्वागत योग्य है . वह चमचा ही क्या जो मंह लगाने के बादस फेंक दिया जाये ... जैसे स्टील के चमचों के दिन फिरे ऐसे सबकें फिरें ... . अशोक व्यास अपने इर्द गिर्द से विषय उठाकर सहज सरल भाषा में व्यंग्य के संपुट के संग थोड़ा गुदगुदाते हुये कटाक्ष करते दिखते हैं .

परसाई जी ने लिखा था बलात्कार कई रूपों में होता है . बाद में हत्या कर दी जाती है . बलात्कार उसे मानते हैं जिसकी रिपोर्ट थाने में होती है. पर ऐसे बलात्कार असंख्य होते हैं जिनमें न छुरा दिखाया जाता है न गला घोंटा जाता है , न पोलिस में रपट होती है।

अशोक जी ने हम सबके रोजमर्रा जीवन में हमारे साथ होते विसंगतियों के ऐसे ही बलात्कारों को उजागर किया है, जिनमें हम विवश यातना झेलकर बिना कहीं रिपोर्ट किये गूंगे बने रहते हैं . उनकी इस बहुविषयक रिपोर्टो पर क्या कार्यवाही होगी ? कार्यवाही कौन करेगा ? सड़क पर लड़की की हत्या होती देखने वाला गूंगा समाज ? व्हाटस अप पर क्रांति फारवर्ड करने वाले हम आप ? या प्यार को कट पीसेज में फ्रिज में रखकर प्रेशर कुकर में प्रेमिका को उबालकर डिस्पोज आफ करने वाले तथाकथित प्रेमी ?

हवा के झोंके में कांक्रीट के पुल उड़ा देने वाले भ्रष्टाचारी अथवा सत्ता के लिये विदेशों में देश के विरुद्ध षडयंत्र की बोली बोलने वाले राजनेता ? इन सब के विरुद्ध हर व्यंग्यकार अपने तरीके से, अपनी शैली में लेखकीय संघर्ष कर रहा है . अशोक व्यास की यह कृति भी उसी अनथक यात्रा का हिस्सा है . पठनीय और विचारणीय है .

पुस्तक चर्चा

टिकाऊ चमचों की वापसी
अशोक व्यास
भावना प्रकाशन, दिल्ली
संस्करण २०२१
अजिल्द , पृष्ठ १२८, मूल्य १९९ रु
चर्चा... विवेक रंजन श्रीवास्तव, भोपाल

मैं कह सकता हूं कि टिकाऊ चमचों की वापसी वैचारिक व्यंग्य संग्रह है. अशोक व्यास संवेदना से भरे, व्यंग्यकार हैं . संग्रह खरीद कर पढ़यि आपको आपके आस पास घटित, शब्द चित्रों के माध्यम से पुनः देखने मिलेगा . हिन्दी व्यंग्य को अशोक व्यास से उम्मीदें हैं जो उनकी आगामी किताबों की राह देख रहा है.

एक लम्बी उड़ान सफलता की ओर

ये है जानभी चौधुरी, जो की ओड़शिा की रहने वाली है। ये एक ग्रेजुएट शिक्षक है। इन्हे संगीत गाना, पेन स्केच करना, प्रकृति फोटोग्राफी करना, सबकी मदत करना, नया कुछ सिखना और नृत्य करना बेहत पसंद है। पहले से इनको लिखना इतना पसंद नहीं था, मगर इनके जीबन में कुछ ऐसा हुआ की, वह डिप्रेशन से गुजरने लगी थी, उनकी मानसिक स्थिति का असर उनके पढ़ाई और तबीयत पर होने लगा, उनकी दशा बहुत बुरी हो गयी थी मगर तभी से उन्होंने लिखना शुरू किया, अपने अंदर के जज़्बातों को कागज़ में ज़ाहिर करना शुरू किया।

अपने हाल को शब्दों में पिरोना शुरू किया। मगर वह कभी हार नहीं मानी और डटकर अपने परिस्थिति का सामना किया और तब इनके माता -पिता ने ही इनका खोया हुआ आत्मबिस्वास बढ़ाया।

वह कहती है, सब हमे समझाने लगे मगर असर तब हुआ जब हम खुदके साथी बने, खुदसे प्यार करना सीखा और अँधेरे में गिरते -संभलते उसने अकेले रोशनी में चलना सिख ही लिया। और आज उन्हे लिखते -लिखते 3-4 साल हो गए हैं।

वह बिश्वास करती है, जो पहले लिखना

पसंद नहीं करती थी आज उसी लेखन से उसके जीबन को एक नयी दिशा दे दी है और ऐसी कोई जगह नहीं है की, जहाँ उनका लिखन न हो, उन्हे कविता, गद्य, शायरी, मोटिवेशनल स्टोरी और अनुच्छेद लिखना बहुत पसंद करती हैं।

स्टोरी मिरर पर भी उनका लिखन है और वह पॉडकास्ट भी करती है। आज न जाने कितने भटके लोगों को वह रास्ता दिखा चुकी हैं। उनका लक्ष्य है की वह सबकी मदत करें, जिस अवस्था से वह गुज़र चुकी है, उससे कोई और न गुज़रे

।वह समाज के लिए आज के युवा के लिए अपने लिखन के माध्यम से मदत करना चाहती है। उनका इंस्टाग्राम पेज है, जहाँ वह 2000+ से ज़्यादा लोगों से जुडी हुई है, अपने लिखन और वॉइस ओवर रील्स के माध्यम से। उनका लक्ष्य है, की वह कभी करोड़ों लोगों की आवाज़ बने, एक मोटिवेशनल स्पीकर बने और लोगों को प्रेरित करें। ये बहुत संकलन में काम कर चुकी है अभी भी कर रही है , बहुत संकलन में ये खुद संकलक भी रह चुकी हैं। इनकी अपनी संकलन है, कलयुग- काल का युग , दिल की बातें (Sarvad Publication), हाल -ए -ज़दिगी - The Untamned (Brown Page Publication), Culture Vs Modernity (Ek Shayar Ki Baate Publication), 90's Memories-The Nostalgia Alert (Uniq Publication) और हाली में लांच हुआ है, माँ -एक सच्ची कहानी, एक संघर्ष की निशानी (JEC Publication) और बहुत से समाचार पत्र में भी प्रकाशित हुई है। जैसे की, संस्कार समाचार, The Gram Today समाचार, Redhanded समाचार, हम हिंदूस्तानी USA (एक साप्ताहिक हिंदी बिदेशी समाचार पत्र), Coalfield Mirror समाचार, युग जागरण समाचार, दैनिक रोशनी समाचार, रुहेला टाइगर्स टाइम्स समाचार, दैनिक साहित्य समाचार, इंदौर समाचार, भारत टाइम्स समाचार, झंझट टाइम्स और राजगीर फ्रंटलाइन समाचार पत्र।इन्हे बहुत पदक, सम्मान पत्र और ट्रॉफी से सम्मानित किया गया है।

विश्वाकाश ग्रंथ रचनाकार के द्वारा सम्मानित पत्र प्राप्ति हुई है इन्हे। विश्वाकाश के चमकते सूर्य 2023 में मिला है इन्हे सम्मान पत्र।

इनकी पुस्तके Amazon, Flipkart पर है और Play Book Store पर भी है। और ये सफलता का श्रेय अपने ईश्वर, अपने पिता -माता और अपने करीबी लोगों को देती है।और बिश्वास करती है की अगर आत्मबिस्वास हो तो इंसान अपनी परिस्थिति का सामना कर, अपनी किस्मत खुद बदल सकता है।

संध्या चतुर्वेदी, मथुरा, उप्र

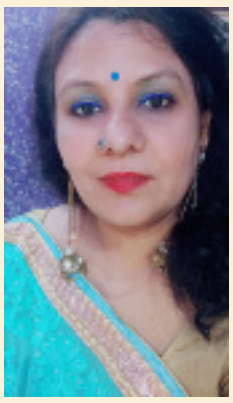

कैसी यह मुहब्बत

कैसी यह मुहब्बत है दोस्तो
कट रही रोज टुकडों में दोस्तों

जब प्यार था तब घर वार छोड़ दिया
आज उस ने ही यार प्यार छोड़ दिया

दिल से उतार फैंक दो उसे तुम
जिसने तुझे दिल से निकाल दिया

सौ टुकड़ो में कटने से अच्छा है
कि अकेले जिंदा रह लेना दोस्तों

जिंदगी जीने की सौ वजह ढूंढ लेना दोस्तों
तुम्हारे साथ जो हो रहा उस से उबर कर

दूसरों के लिए थोड़ा जी लेना दोस्तों
गम न करना मुहब्बत गंवाने का जरा भी

मिलती नहीं यह जिंदगी दुबारा तो
कुछ अपनी फिक्र कर लेना दोस्तों।।

ममता सिंह राठौर कानपुर

कदम भी अपना सफर

मोहब्बत लिखा तो पूछा यह क्या लिखा
नफरतों में यही सवाल किसके लिए लिखा।।

अरे बाबा लिखने दीजिए ख़ुद से जीने दीजिए
मन के विस्तृत आंगन में आने _ जाने दीजिए।।

अनुभवों के रंग से जिंदगी रगने दीजिए
अरे बाबा जिंदगी के स्वाद को चखने दीजिए।।

हदों के पार का ख़ामोश देखिए
मोल _तोल के बीच का झोल देखिए।।

अरे देखिए तो सही
जिंदगी का कड़वा कठोर देखिए
कदम भी अपना सफर भी अपना चलते चलिए।।

कही _सुनी कुछ _तुड़ी मुड़ी
मीठी खट्टी मिली जुली
यह जिंदगी किसकी खातिर,
मन के माफिक कौन है साथी।।

सहज और सरल भाव से पाठकों के अतंस तक पहुंचती हैं रचनाएं

डॉ पुष्पा जोशी

बहरुपिया चांद जैसा कि इस काव्य-संग्रह का नाम है। वास्तव में चांद बहरुपिया ही है। सत्ताईस नक्षत्रों को एक-एक दिन स्वयं में आत्मसात करता हुआ अपने आकार को प्रतिदिन परिवर्तित करता रहता है।

कभी दूज का चांद कभी परेवा का चांद कभी चौथ का चांद कभी पूरी तरह अदृश्य अमावस्या का कभी पूर्ण रूप धर अपनी अद्भुत छटा बिखेरता चांद.....अब देखते हैं डॉ ज्योत्स्ना जी का चांद कैसा है.....

चांदी से चमकीले
कभी पीले कभी नीले
रौशनी से भरे-भरे
तारों संग इठलाते हो
बहरुपिया हो चांद तुम
कभी मामा ,कभी भाई
कभी बेटा ,कभी साजन
कभी गहना,कभी दुल्हन

मुझे लगता है चांद के रुप वर्णन करने से कोई लेखक, कवि अछूता नहीं रहा होगा। गद्य हो या पद्य चांद सभी जगह अपनी पकड़ बनाए रहा। हमारी डॉक्टर साहिबा ने तो चांद को पूरा काव्य -संग्रह ही समर्पित कर डाला।

कवयित्री का प्रथम काव्य-संग्रह ७५ छंदमुक्त कविताओं के साथ काव्य का अमृत महोत्सव मना रहा है। बहरुपिया चांद कविता-संग्रह में कोई भी विषय अछूता नहीं रहा है। मानवता,राष्ट्र, प्रकृति, सम्बन्ध और दोस्ती पर भी कविताएं पाठकों को यहां पढ़ने को मिलेंगी। वैसे भी दोस्ती कविता न रची गई हो तो सब निरर्थक सा लगता है। अरे ! दोस्त ही तो दोस्त की आंखों से बरसात की बूंदों में से आंसू पहचान लेता है।' दोस्ती ' 'दोस्त हैं वो मेरा ' 'ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेगे ' इन तीनों कविताओं का निचोड़ रही है....

बिन दोस्त जीना
क्या जीना, दोस्त
खूं के रिश्ते से भी
अज़ीज़ लगते हैं

दोस्त के लिए कही गई इस बात को किसी कसौटी की आवश्यकता नहीं।' पूनम की रात आज ' कविता में उत्कृष्ट श्रृंगार की छटा देखते ही बनती है-

ओढ़ के चूनर सितारों भरी
निकला लो चांद आज

यहां चांद का मानवीकरण पाठकों को देखने को मिलेगा।

' परिभाषा प्रेम की ' कविता की बानगी देखें...

तोड़ देता कारागार
काट देता लौह बन्धन
लांघता उफनते सागर
तोड़ता हर वर्जना
कुछ भी कर सकता है प्रेम
क्योंकि प्रेम तो बस प्रेम है

मेरे विचार से प्रेम को परिभाषित नहीं किया जा सकता।वह तो अनंत है,असीम है, अद्भुत अनुभूति का द्योतक है। प्रेम की कल्पना परिकल्पना उसे बांध नहीं सकते।

'प्यारी हिन्दी' , 'तेरे लिए ऐ देश मेरे ','गुरु महिमा ' कविताएं अलग-अलग कलेवर से पाठकों को अपनी भाषा का मान ,देश की शान और गुरु की सम्मान करने की सीख देंगी।

' लो जी होली तो होली ' , 'आज रंग है ',छिपाओ न प्रीत .....

होली के रंगों से पाठकों को सराबोर करती हुई कविताएं फाग के माह में पहुंचा देंगी। डॉ ज्योत्स्ना जी काव्य-संग्रह का श्री गणेश सरस्वती वंदन फिर गुरुओं के नमन से किया है।

मेरा मानना है कि अपने प्रथम काव्य-संग्रह बहरुपिया चांद में कवयित्री डॉ ज्योत्स्ना सिंह जी ने अपने शब्द-चयन और शिल्प-सौष्ठव में परिपक्वता का परिचय देते हुए अत्यंत सहज और सरल भाव से पाठकों के अतंस तक पहुंचने का प्रबंध कर लिया है। आपकी काव्य का स्थाई भाव उत्कृष्टता में विराट का सृजन करे। ज्योत्स्ना जी आप कालजयी सृजन करती हुई कविता यात्रा में अग्रसर हों। बहरुपिया चांद आपके लिए मील का पत्थर साबित हो। अमृत प्रकाशन को भी उत्कृष्ट काव्य -संग्रह प्रकाशित करने के लिए हार्दिक बधाई देती हूं। डॉ ज्योत्स्ना जी को बहरुपिया चांद कविता-संग्रह के आत्मिक बधाई, शुभकामनाएं देती हूं।

पुस्तक समीक्षा-बहरुपिया चांद (कविता-संग्रह)

रचयिता-डॉ.ज्योत्स्ना सिंह 'अंदलीब'
छंदमुक्त कविताएं-75 मूल्य-350 रूपए
पृष्ठ-168 अमृत प्रकाशन दिल्ली

पूजा 'बहार'

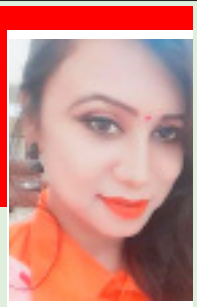

उसने बिना मांगे
सब कुछ दिया।।

दर्द दिया
तन्हाई दी
आँसू दिए
बेवफाई दी।।

ज़माने भर के
ग़म दिए।।

रुसवाईयां दीं
नहीं दिया तो बस
वो थोड़ा सा
वक़्त।।

जिस पर
मेरा हक़ था
सिर्फ मेरा!!!

राजा मीना
मीना हाई कोर्टनांगल राजावतान
दौसा (राज.) मो.9782253457

कविता : मां

मां ऐसा कहती है
संभल संभल के चलना बेटा
दुनियां की राहों में कष्ट बहुत आएगा बेटा
जीवन की इन पड़ावों मे
ये संसार ऐसा ही हैं
जिसने सीता माता पर भी
मिथ्या आरोप लगाया था
तुम तो साधारण सी लडकी हो
दुनिया कि बातो उलझ गई तो
मार्ग भटक जाओगी
सोच समझकर निर्णय लेना बेटा
दुनिया की इन राहों में
द्रौपदी की लाज बचाने
कृष्ण मुरारी आये थे
अब तो कलयुग है कृष्ण कहां से आएंगे
कैसे तुम्हे बचायगे
तुम्हे अपनी लड़ाई
स्वयं लड़नी होगी वीरागना बनकर
अपनी रक्षा स्वयं करनी होगी
यदि हिम्मत हार गई तो
कैसे तो कैसे लड़ पाओगी
हिम्मत साहस से चलना बेटा
दुनिया की इन राहों में ।।

व्यंग्य: सुबह और शाम चाय का नाम

अशोक व्यास

चाय को अंतर्राष्ट्रीय पेय की मान्यता शायद अभी तक नहीं मिली हो लेकिन एक आम भारतीय सुबह उठकर भगवान का नाम भले ही न ले परन्तु वह चाय को इतनी शिद्दत से याद करता है कि सारी कायनात उसकी इच्छा को पूरी करने के लिये परिवार सहित जुट जाती है . साथ में परिवार के सदस्य भी चाय पीने के लिये लालायित होने लगते हैं. इसी वजह से भारत में चाय को भारतीयों ने अघोषित रूप से राष्ट्रीय पेय का दर्जा दे रखा है और अनुमान है कि विश्व में सबसे अधिक चाय उत्पादन के साथ साथ सबसे अधिक चाय पीने का सोभाग्य भी हमें ही प्राप्त है.

हम सुबह उठने से लेकर रात को सोने के समय तक कभी भी चाय पी सकते हैं चाय पीना हमारा सबसे बड़ा शौक है, पेशन है. उसकी गरिमा कम ना हो जाये इसलिए जैसे पेट्रोल के दाम यदाकदा बढ़ जाते है उसी प्रकार सरकारी और गैर सरकारी दूध बेचने वाले भी दूध के दाम अक्सर बड़ा देते हैं. अगर नहीं बढ़ाएं तो लगता है कि चाय की प्रतिष्ठा कहीं कम तो नहीं हो गई है। अतः दूसरे ही महीने फटाक से दूध या चायपत्ती या शक्कर में से किसी ना किसी के दाम बढ़ ही जाते हैं तब जाकर छाती में ठंडक नहीं गर्मी का एहसास होने लगता है. वैसे अब आवश्यक वस्तुओं का भाव बढ़ने से कोई आश्चर्य नहीं होता है क्योंकि इससे हमारी क्रय शक्ति बढ़ने का सरकार को पता चलता रहता है जिससे उसे टेक्स बढ़ाने में सुविधा हो जाती है. अगर दाम नहीं बढ़े तब जरूर ऐसा लगता है कि आम आदमी की किरकिरी हो गई हो कि यह साला चाय का खर्च भी वहन करने की कुव्वत नहीं रखता है. दूध के दाम बढ़ गए तो ऐसा लगा जैसे अंतर्राष्ट्रीय बाजार मे कच्चे तेल के दाम बड़ गए हो. चाय पत्ती पहले ही 'पत्ता पत्ता बूटा बूटा हाल हमारा जाने' की तरह हो गई है शक्कर की मिठास किसान को गन्ने पर मिलने वाली सब्सिडी पर निर्भर है. मतलब यह है कि भारतीय अपना राष्ट्रीय पेय पीने पर गर्व की अनुभूति कर सकते हैं. कुछ तो चाय की ज्यादा तारीफ करके हमने ही उसकी आदतें खराब की कि वो स्पेशल हो गई है क्योंकि पहले होती थी चाह वाली चालू चाय और अब वह बन गई है गोल्डन, कड़क मीठी स्पेशल चा.....य जब वह वाकई में चालू हुआ करती थी तब उसकी जो इज्जत थी वह इस कारण थी कि चाय तब ही चाय मानी जाती थी जब वह लबसोज हो, लबदोज हो और लबरेज हो यानी चाय इतनी गरम हो की होंठ जल जाए, इतनी मीठी हो की होंठ चिपक जाए और प्याले में इतनी भरी हो कि प्लेट में डालकर सुड़कते हुए पिया जाए.

एक जमाना था जब चाय पीते हुए एक से बढ़कर एक चर्चाएं होती थी उसके बाद एक दौर आया की चाय पीते हुए चर्चा नहीं बल्कि खुद चाय पर चर्चा होने लगी इस चक्कर में सरकारों की चला चली के बेला आ गई थी. बताओ भला यह क्या बात हुई कि जो बातें चाय पीते हुए होती थी उसे छोड़कर सब चाय पर चर्चा करने लगे. इस चक्कर में आजकल चाय पीने वालों का अवमूल्यन होने लगा है किसी से चाय पीने का पूछो तो कोई कहेगा नहीं मैं चाय नहीं पीता हूं, दूसरा कहेगा बस थोड़ी सी देना,

चौथा कहेगा मैं तो काफी पीता हूं, पांचवा कहेगा में तो कुछ और पीता हूं. यह तो सरासर अपमान है अंग्रेजों की दी गई नेमत का. हालांकि उसमें भारतीय किचन के जितने मसाले हैं उसे डालकर हम उसे अमृत बना चुके हैं. अब यह हो रहा है कि चाय की चर्चा नहीं, चाय पर चर्चा नहीं, चाय पर खर्चे की बात होने लगी. मंहगी चाय पत्ती, पेट्रोल के बड़ते दामों की तरह अचानक दूध के दाम में बढोतरी, अंतरराष्ट्रीय बाजार में शक्कर की कमी के कारण निर्यात करना यह सब फालतू बातें होने लगी. पुराने लोगों से पूछो तो वह कहेंगे 'साहब चाय तो हमारे जमाने में पी जाती थी यह नए लोग क्या जाने एक प्याली में दो घूंट भी बड़ी मुश्किल से पी पाते हैं. हमारे जमाने में तो थाली में डालकर चाय पीते थे. उसके बाद गिलास भरकर पीने लगे फिर कप प्लेट का जमाना आ गया तो उसमें भी हमने कोई कमी नहीं की थी दो कप चाय से कम नहीं पीते थे वर्ना तोहीन मानी जाती थी चाय की और पीने वाले दोनों की '.

चाय का जीवन में पिछली शताब्दी में इतना महत्व था कि जब भी किसी जवान हुई कन्या की मां को उसकी शादी का ख्याल आता था तो वह होने वाले दामाद को चाय पर बुला लेती थी. तब वह कन्या भी फट से समझ जाती थी और अपने प्रेमी से गा गा कर कहती थी कि ' शायद मेरी शादी का ख्याल दिल में आया है इसीलिए मम्मी ने मेरी तुम्हें चाय पर बुलाया है'.

सगाई संबंध कराने में चाय का इससे बड़ा सामाजिक योगदान क्या हो सकता है. सत्तर अस्सी के दशक में तो कन्या के हायर सेकेंडरी करने के बाद होम साइंस से ग्रैजुएट करने को शादी से पूर्व का वेटिंग इन पीरियड माना जाता था. तब और कुछ सीखती या ना सीखती टीकोजी बनाना जरूर सीखती थी. आज की पीढ़ी अगर सुन ले तो उसे कोई पारले जी की तरह कोई बिस्कुट समझ ले जबकि यह भी अंग्रेजों की देन थी.

उस समय टीकोजी का एक ही बार इस्तेमाल होता था जब लड़का उस कन्या को देखने आता था. तब कन्या सर पर पल्ला रखकर आहिस्ता और सधे हुए कदमों से चलकर आती थी घरवाले कहते थे 'बेटी मेहमानों को चाय पिलाओ' तब वह छोटी बहन या भाभी द्वारा पहले से लाई गई घर के एकमात्र टीसेट जिसका काम भी एक ही बार पड़ता था उस की केटली से टीकोजी ऐसे उठाती थी जैसे किसी का घूंट उठाया जा रहा हो. तब एक हाथ से केटली के हैंडल को और दूसरे हाथ को ढक्कन पर रखकर कप में चाय भरकर मेहमानों को देती थी. इस सारी प्रक्रिया को लड़के के साथ आने वाली महिलाएं इतनी तीक्ष्ण दृष्टि से देखती थी जैसे होम साइंस प्रेक्टिकल का परीक्षक देख रहा हो. बिना आवाज किए, बिना चाय गिरे अगर लड़की ने चाय को पेश कर दी तो समझो प्रैक्टिकल में पूरे नंबर मिल गए आगे तो संबंध पक्का होना ही समझो.

इसी प्रकार कोई भी धार्मिक कर्मकांड बिना चाय का दौर चले पूरा नहीं माना जाता है उसमे पूजा सामग्री के साथ चाय का भी प्रावधान करना पड़ता है।

Thursday
25 January 2024

BNM Fantasy

ओरी ने ठुकराई पलक तिवारी की माफी

ओरी उर्फ ओरहान अवात्रामणि इंटरनेट सेंसेशन हैं. वह सोशल मीडिया की दुनिया में एक ऐसा नाम बन चुके हैं जो आए दिन खबरों में छाए रहते हैं. फिल्म इंडस्ट्री से ताल्लुक न होने के बावजूद ओरी हर बॉलीवुड स्टार के फेवरेट हैं. इन दिनों ओरी एक बार फिर सुर्खियों में छाए हुए हैं, लेकिन इस बार वह अपनी किसी फोटो को लेकर नहीं बल्कि अपने एक चैट को लेकर चर्चा में बने हुए हैं. इन दिनों सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहे इस चैट में ओरी श्वेता तिवारी की बेटी और एक्ट्रेस पलक तिवारी को अपमानजनक बातें कहते दिख रहे हैं.

म

मोनालिसा के पति विक्रांत सिंह राजपूत कटघरे में लेकर आईं आम्रपाली दुबे

भोजपुरी की मशहूर अभिनेत्री आम्रपाली दुबे ने फिटनेस आइकन विक्रांत सिंह राजपूत को कटघरे में खड़ा कर दिया, जिसके बाद बवाल मच गया. विक्रांत की छवि इंडस्ट्री में काफी साफ रही है, लेकिन आम्रपाली दुबे (Amrapali Dubey) से आखिर ऐसा क्या हो गया कि आम्रपाली उन्हें कोर्ट तक खींच लाई और जज के सामने उन्हें कटघरे में अपनी सफाई पेश करनी पड़ी. अब इसकी तस्वीर भी वायरल हो रही है, जिससे लोगों में काफी उत्सुकता है कि आखिर हुआ क्या? बात ये है कि मामला पूरी तरह से फिल्मी और रील लाइफ से जुड़ा है. आम्रपाली दुबे और विक्रांत सिंह राजपूत रेणुविजय फिल्म्स इंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के बैनर तले बन रही फिल्म 'बीवी हो तो ऐसी' में साथ नजर आने वाले हैं. इस फिल्म के निर्माता निशांत उज्जवल, सह निर्माता सुशांत उज्जवल व डॉ संदीप उज्जवल और लेखक सह निर्देशक सोमभूषण श्रीवास्तव हैं. और विक्रांत सिंह राजपूत का कटघरे में खड़ा फोटो फिल्म 'बीवी हो तो ऐसी' का ही है, जो इन दिनों वायरल भी हो रहा है. इस फिल्म में आम्रपाली दुबे और विक्रांत सिंह राजपूत पति पत्नी की भूमिका में नजर आने वाले हैं. इसमें जहां आम्रपाली का लुक एक हाउस वाइफ की तरह दिख रहा है, वहीं विक्रांत सिंह राजपूत एक साधारण से सरकारी बाबू की तरह नजर आ रहे हैं. फिल्म की कहानी क्या है, यह अभी आउट नहीं हुआ है। लेकिन ये बताया जा रहा है कि फिल्म 'बीवी हो तो ऐसी' एक अलग टायप की स्टोरी वाली फिल्म है,

माधुरी नए साल पर पहुंचीं सिद्धिविनायक मंदिर

पति और बच्चों संग टेका माथा

बॉलीवुड सितारों ने धूम-धाम से नए साल का स्वागत किया. जहां ज्यादातर बॉलीवुड सितारों ने पार्टी कर शानदार तरीके से 2024 की शुरुआत की. वहीं बॉलीवुड की 'धक-धक गर्ल' माधुरी दीक्षित ने गणपति बप्पा के दर्शन कर नए साल की शुरुआत की है. माधुरी दीक्षित पति श्रीराम नेने और बेटे के साथ बप्पा के दर्शन करने सिद्धिविनायक मंदिर पहुंची थीं. एक्ट्रेस ने परिवार संग माथा टेक नया साल मंगलमय होने की कामना की और साथ ही एक्ट्रेस ने अपनी अपकमिंग फिल्म की सफलता के लिए भी गणपति बप्पा से आशीर्वाद लिया. माधुरी दीक्षित जल्द ही एक मराठी फिल्म में नजर आने वाली हैं. एक्ट्रेस की मराठी फिल्म 'पंचक' जल्द ही रिलीज होने वाली है. ये फिल्म 5 जनवरी को रिलीज होने के लिए तैयार है. सिद्धिविनायक में दर्शन के दौरान माधुरी दीक्षित सूट पहने दिखीं. वहीं उनके पति श्रीराम नेने बेटे संग लाल रंग के कुर्ते में ट्विनिंग करते दिखे. एक्ट्रेस ने दर्शन के बाद वहां मौजूद फैंस के साथ फोटो भी खिंचवाई. माधुरी दीक्षित की सादगी फैंस को खासा आकर्षित करते दिखी. उनका सादगी भरा अंदाज सोशल मीडिया पर खूब वाहवाही बटोर रहा है. बप्पा के दर्शन के बाद एक्ट्रेस ने बप्पा की फोटो और माला के साथ भी पोज दिए. अगर वर्क फ्रंट पर बात करें तो माधुरी दीक्षित ने बॉलीवुड और मराठी फिल्मों के अलावा ओटीटी पर भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराई है. वह साल 2022 में वेब सीरीज 'फेम गेम' में नजर आई थीं. इस सीरीज में एक्ट्रेस के अपोजिट संजय कपूर दिखे थे और दोनों की जोड़ी पर्दे पर एक बार फिर पुराना जादू दोहराने में सफल रही थी. उसके बाद माधुरी दीक्षित फिल्म 'मजा मा' में भी दिख चुकी हैं. 'मजा मा' में एक्ट्रेस गजराज राव, बरखा सिंह और सिमोन सिंह संग नजर आई थीं.